कार्य संतुष्टि एवम् शिक्षकों के बीच सह संबंध पर एक अध्ययन

मोहित[1] डॉ. पूनम लता मिढ़ा[2]

[1]शोधार्थी [2]शोध पर्यवेक्षक

विभाग:– शिक्षा शास्त्र

ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल

सहारनपुर, उत्तरप्रदेश

ईमेल आईडी:- mohitkumar111@gmail.com

सारांश

प्रत्येक समाज में शिक्षक युवा पीढ़ी के भविष्य को आकार देने में अपरिहार्य भूमिका निभाते हैं। वे ज्ञान, मूल्यों और कौशल के प्रमुख वास्तुकार हैं जो छात्रों को जिम्मेदार नागरिक और सफल व्यक्ति बनने के लिए सशक्त बनाते हैं। नतीजतन, शिक्षकों की संतुष्टि और भलाई शिक्षा की गुणवत्ता और किसी राष्ट्र के समग्र विकास को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण कारक हैं।

अपने काम से शिक्षकों की संतुष्टि का अध्ययन अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो शिक्षण पेशे के बहुमुखी पहलुओं पर प्रकाश डालता है। शिक्षकों की नौकरी से संतुष्टि का तात्पर्य शैक्षणिक संस्थानों के भीतर उनकी भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और कामकाजी परिस्थितियों में शिक्षकों द्वारा अनुभव की गई संतुष्टि, खुशी और संतुष्टि से है। कई कारक शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि में योगदान करते हैं, जिसमें स्कूल का माहौल, प्रशासनिक सहायता, कक्षा संसाधन, व्यावसायिक विकास के अवसर, छात्र-शिक्षक संबंध, कार्यभार, वेतन, कार्य-जीवन संतुलन और सहकर्मियों और वरिष्ठों से मान्यता जैसे तत्व शामिल हैं।

परिचय:

शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की गतिशीलता को समझना नीति निर्माताओं, स्कूल प्रशासकों, स्वयं शिक्षकों और अभिभावकों सहित विभिन्न हितधारकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक संतुष्ट शिक्षण कार्यबल न केवल छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और व्यक्तिगत विकास में सकारात्मक योगदान देता है, बल्कि कुशल शिक्षकों को बनाए रखने और भर्ती करने में भी मदद करता है, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की निरंतरता के लिए महत्वपूर्ण है।

इस व्यापक अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के विभिन्न आयामों का पता लगाना और उन कारकों को उजागर करना है जो उनकी संतुष्टि और कल्याण की भावना को प्रभावित करते हैं। शिक्षण पेशे में चुनौतियों, सफलताओं और सुधार के क्षेत्रों का विश्लेषण करके, यह

शोध संभावित हस्तक्षेपों और रणनीतियों पर प्रकाश डालना चाहता है जो समग्र शिक्षक संतुष्टि को बढ़ा सकते हैं।

कार्य के प्रति संतुष्टि-

आज व्यक्तियों के सामने सबसे बड़ी कठिनाई ऐसी नौकरी ढूंढना है जिससे वे खुश हों। निजीकरण के इस युग में तकनीकी प्रगति के साथ-साथ नौकरी की असुरक्षा की धारणा तेजी से बढ़ रही है। इसलिए, यह विषय उभरकर सामने आता है कि क्या सरकारी और निजी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के पास कार्य संतुष्टि और प्रतिष्ठा के विभिन्न स्तर हैं।

शैक्षिक प्रणाली और शिक्षकों के बीच संबंध उनकी कार्य संतुष्टि और तनाव स्तर दोनों को प्रभावित करते हैं। शिक्षक अपने करियर के बारे में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से महसूस करते हैं। आज की पीढ़ी अब अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं है। प्रशिक्षक का रवैया कार्य संतुष्टि में परिलक्षित होता है। इस पर अनेक तत्वों का प्रभाव पड़ता है। इसमें निम्नलिखित क्रियाएं शामिल हैं:

1. स्कूल प्रबंधन से संबंधित गतिविधि
2. व्यवसायिक और व्यक्तिगत उन्नति से संबंधित गतिविधियां
3. अतिरिक्त कक्षा-कक्ष गतिविधियां
4. पर्यवेक्षण से संबंधित गतिविधियां।

इसी प्रकार यदि अध्यापकों के दैनिक कार्यों का अध्ययन किया जाए तो कुछ व्यक्तिगत कारक भी है जो व्यवसाय को प्रभावित करते है जैसे-

1. आयु
2. स्वास्थ्य
3. आकाक्षाएं
4. प्रेरणाएं
5. सामाजिक संबंध

अपने अध्यापन के आधार पर (हॉटक ने 1990) में नौकरी की संतुष्टि के निम्नलिखित छः मुख्य घटकों का सुझाव दिया है:-

1. जिस तरह से व्यक्ति अप्रिय स्थितियों पर प्रतिक्रिया करता है।
2. जिस सुविधा के साथ वह खुद को समायोजित करता है।

3. सामाजिक और आर्थिक समूहों में खुद की पहचान करते है।

4. कार्य कुशलता, हितों और कार्यक्रमों की तैयारी के संबंध में काम की प्रवृति व सुरक्षा, निष्ठा ।

ये वास्तविक तत्व हैं जो काम की खुशी में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वास्तव में, किसी व्यक्ति की अपने काम, जिससे वह संतुष्ट नहीं है, के साथ-साथ अपने सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में खुद को ढालने की क्षमता उसकी भावनात्मक स्थिरता और भावनात्मक समायोजन से जुड़ी होती है। पर्यवेक्षण के साथ शारीरिक और मानसिक संतुष्टि का स्तर, संगठन के नियम और प्रशासन, वेतन और गुणवत्ता, अन्य बातों के अलावा, सभी का नौकरी की संतुष्टि और तनाव पर प्रभाव पड़ सकता है।

भावनाएँ जो मानव स्वभाव का हिस्सा हैं और परिस्थितियों और काम के कारण उत्पन्न होती हैं, उनका व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। निस्संदेह, किसी व्यक्ति की सहज प्रवृत्ति उसके कार्यभार और वातावरण से प्रभावित होती है। जब कार्यस्थल पर तनाव होता है तो व्यक्ति अपने हितों को ध्यान में रखता है और कार्य से संतुष्ट नहीं होता है।

देश में नाखुशी एक व्यक्तिगत परिणाम है. यदि कोई शिक्षक अपने पेशे के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध नहीं है या अपने दायित्वों के प्रति कोई सम्मान नहीं दिखाता है, तो वह न केवल अपने छात्रों को बल्कि पूरे समाज और देश के भविष्य को भी धोखा दे रहा है। कुछ कार्यस्थल परिस्थितियों के कारण जो तनाव और उदासीनता का कारण बनती हैं, बड़ी संख्या में प्रशिक्षक अपनी नौकरी में संतुष्टि की भावना खो रहे हैं। ये कारण, जो सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं, उनमें शामिल हैं:

1. व्यवसाय या नौकरी में सुरक्षित होने का अभाव
2. काम का दबाव
3. आवास से कार्य स्थल की दूरी
4. कार्य को एक रूपता
5. अपर्याप्त व अनियमित वेतन
6. सामाजिक स्थिति का अभाव
7. राजनैतिक हस्तक्षेप
8. छात्रों में अनुशासनहीनता

प्रसिद्ध हॉथोर्न अनुसंधान, जिसे माया ने वेस्ट हिलेरी, कंपनी (2009-10) में किया था, संभवतः कार्य संतुष्टि के अध्ययन के लिए एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना है।

नौकरी से संतुष्टि और नौकरी से संतुष्टि दो शब्द हैं जो कार्यों और दायित्वों के समायोजन को संदर्भित करते हैं, जो श्रमिकों को व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करते हैं।

विभिन्न भावनाएँ और उत्तेजनाएँ संतुष्टि का निर्माण करती हैं। अधिकांश व्यक्ति न केवल अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए काम करते हैं, बल्कि कार्यस्थल पर अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए आत्म-अभिव्यक्ति के रूप में भी काम करते हैं।

नौकरी से संतुष्टि व्यक्ति को अपने बारे में अच्छा महसूस कराकर उत्पादकता बढ़ाती है कि उन्होंने कुछ हासिल किया है। जब किसी व्यक्ति को काम पर तनाव नहीं होता है, तो वह अपना काम कर सकता है और किसी भी परिदृश्य के अनुकूल ढल सकता है। प्रशिक्षकों की विशेषताओं का लगातार ध्यान रखा जाना चाहिए क्योंकि वे अंततः देश के युवाओं के विकास के लिए जिम्मेदार हैं। उन्हें अपने विद्यार्थियों के प्रति समर्पित होना चाहिए और जिम्मेदारी, देखभाल और कठिन प्रयास के साथ शिक्षित करना चाहिए। (एन.पी. पिल्लै) के अनुसार, सामाजिक पुनर्निर्माण में कार्यकर्ताओं के रूप में शिक्षकों की भूमिका की स्वीकार्यता पारंपरिक संस्कृति को आधुनिकता के साथ सामंजस्य बिठाने में मदद करती है।

स्मिथ (1969) का दावा है कि "नौकरी से संतुष्टि" एक भावनात्मक चरण है जो एक ओर कार्यकर्ता की वर्तमान स्थिति और उसके अनुकूलन की डिग्री पर निर्भर करता है, और दूसरी ओर "नौकरी से संतुष्टि का अर्थ स्वयं, समाज और कार्य का समायोजन है"। .

बुलॉक (1952) ने कहा कि "नौकरी से संतुष्टि को उस रवैये के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो किसी कर्मचारी द्वारा नौकरी में अनुभव की गई विशिष्ट पसंद और नापसंद के संतुलन और योग से उत्पन्न होता है" नौकरी और रोजगार की खुशी को प्रभावित करने वाले कारक नौकरी या काम के कई अलग-अलग पहलू हैं ख़ुशी; कुछ व्यक्ति अपनी नौकरी से संतुष्ट हैं जबकि अन्य नहीं, यह निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करता है:-

व्यक्तिगत कारक

1. आयु
2. आश्रितों की संख्या
3. कार्य का समय

4. शिक्षा या योग्यता

5. बुद्धि

2. व्यवसायिक कारक कार्य का प्रकार

1. व्यवसायिक स्थिति

2. मान्यता

3. जिम्मेदारी

4. उपलब्धि

सामाजिक कारक-

1. पर्यावरण

2. पारस्परिक संबंध

3. स्वतंत्रता

4. व्यवसायिक समायोजन

5. निर्णय लेने की जिम्मेदारी

ये कुछ सामान्य तत्व हैं जो प्रत्येक कर्मचारी को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। और आनंद लें और नेतृत्व से संतुष्ट रहें क्योंकि प्रशिक्षक लगातार अपने काम को आगे बढ़ाते हैं।

नौकरी तनाव:

आज का वैज्ञानिक वातावरण तीव्र प्रतिद्वंद्विता का है, जो हर परियोजना पर दबाव डालता है। कुशल प्रबंधन और साझेदारी से प्रत्येक संगठन को लाभ होता है। सभी क्षेत्रों और कार्यस्थल पर विचारों के टकराव और काम के बोझ के कारण तनाव होता है।

प्रशिक्षकों के सामने कई ऐसी परिस्थितियाँ घटित होती हैं जिनका प्रभाव सीखने के माहौल पर पड़ता है। समग्र शिक्षा व्यवस्था के संचालन में एक महत्वपूर्ण कड़ी शिक्षक होता है। परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने पर विद्यालय व्यवस्था प्रभावित होगी। तनाव कई सामाजिक, पारिवारिक और राजनीतिक कारकों से उत्पन्न होता है।

कार्य संतुष्टिः

किसी कर्मचारी का अपने काम के प्रति जो समग्र रवैया होता है उसे कार्य संतुष्टि कहा जाता है। इस धारणा पर कि एक कर्मचारी अपने परिवेश से जिस पुरस्कार की अपेक्षा करता है और जो उसे वास्तव में मिलता है, उसके बीच विसंगति है, इसका मूल्यांकन किया जा सकता है। यह एक प्रकार की प्रेरणा है जो कार्यकर्ता को काम करते समय अत्यधिक आनंद की अनुभूति

कराती है। कार्य संतुष्टि की इस भावना को सामूहिक रूप से परिभाषित करने का कोई तरीका नहीं है क्योंकि इसे व्यक्तिगत आधार पर अनुभव किया जाता है।

बुलॉक का कहना है, 'रोज़गार संतुष्टि एक ऐसा दृष्टिकोण है जो वांछित और अवांछित घटनाओं की एक श्रृंखला से उत्पन्न होता है जो किसी व्यक्ति की उसके रोजगार के साथ भागीदारी को दर्शाता है।'

ब्राउन नौकरी की संतुष्टि को किसी व्यक्ति के कार्य वातावरण के संबंध में उसके सकारात्मक अनुभव या मनोवैज्ञानिक स्थिति के रूप में परिभाषित करता है। गिल्मर के शब्दों में, नौकरी से संतुष्टि या नाखुशी, "विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण का परिणाम है जो व्यक्ति संबंधित कारकों और सामान्य रूप से जीवन में अपने काम के प्रति रखता है।"

उपरोक्त मानदंड यह स्पष्ट करते हैं कि जो कर्मचारी अपनी नौकरी से खुश हैं उनका मानसिक संतुलन अच्छा है। एक सकारात्मक मानसिक स्थिति कार्यकर्ता को प्रेरित, उत्साहित रखती है और उसकी उत्पादन क्षमता में किसी भी तरह की गिरावट को रोकती है। कई अध्ययनों से पता चला है कि जो कर्मचारी काम से नाखुश होते हैं वे कम उत्पादक हो जाते हैं। इसलिए, किसी कर्मचारी की नौकरी से संतुष्टि की कमी को बनाए रखने के लिए, यह आवश्यक है कि विशिष्ट कर्मचारी को एक ऐसा पद मिले जो उसे केवल जीवन निर्वाह का साधन प्रदान करने के बजाय अपने काम के लक्ष्यों और खुशहाल जीवन के लिए अन्य सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रेरित करे। .

इसमें कुछ घटक होने चाहिए:-

शिक्षक की नौकरी से संतुष्टि: प्राचीन काल से, विशेषज्ञों का मानना है कि एक स्वस्थ दिमाग स्वस्थ शरीर का एक हिस्सा है, और मानसिक कार्य समकालिक होते हैं। कभी-कभी, यह भी पता चला है कि यद्यपि दोनों (शरीर और मानसिक प्रक्रियाओं) के बीच पर्याप्त संतुलन और अच्छा तालमेल है, फिर भी व्यक्ति को वह सब कुछ नहीं मिल रहा है जो उसे मिलना चाहिए। उसे कभी-कभी ऐसा महसूस होता है जैसे उसके जीवन में कुछ कमी है। कभी-कभी उसे लगता है कि वह अब और अधिक के लिए नहीं लड़ सकता, और अंततः वह निर्णय लेता है कि इतना कुछ करने की आवश्यकता नहीं है, जो है वही पर्याप्त है।

इस तरह, जैसे-जैसे व्यक्ति की सोच और चिंतन का तरीका बदलता है, वह उत्तरोत्तर वास्तविकता से संपर्क खोता जाता है और तनाव के जाल में फंसता जाता है। अपने कौशल

और प्रतिभा के अनुरूप वह जो पाने का हकदार था उसे प्राप्त करने के बाद भी, वह उदास महसूस करने लगता है। असंतोष वर्तमान मानसिक स्थिति है।

नौकरी की ख़ुशी कर्मचारी-अंतर्निहित विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रभावित होती है। ये दृष्टिकोण पूरी तरह से काम से जुड़े हैं, और वे उस काम के कई विशेष पहलुओं से भी संबंधित हैं, जिनमें वेतन, पर्यवेक्षण, नौकरी की स्थिरता, काम करने की स्थिति, उन्नति की संभावनाएं, किसी के काम का उचित मूल्यांकन, सामाजिक प्रतिष्ठा आदि शामिल हैं। कोई आकार या रूप, नौकरी से संतुष्टि। लेकिन इसका प्रभाव निःसंदेह पड़ता है। उच्च वेतन, आरामदायक रहने की स्थिति, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच, भविष्य की सुरक्षा और अन्य कारक ही एकमात्र ऐसे कारक नहीं हैं जो किसी कर्मचारी के समग्र विकास में योगदान दे सकते हैं; उसका बौद्धिक विकास और पर्याप्त भावनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। है। इसके अतिरिक्त, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने से उन चुनौतियों से निपटने में मदद मिल सकती है जो दैनिक जीवन के लिए प्रासंगिक हैं।

इसलिए, यह दावा किया जा सकता है कि किसी व्यक्ति की अपने रोजगार के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया इस बात की तुलना में कम सुखद और सकारात्मक है कि वे अपने काम या काम के अनुभवों को कैसे रेटिंग देंगे। यह भावना व्यक्ति की उस सीमा की समझ से ही विकसित होती है जिस हद तक उसकी गतिविधियाँ मौलिक सिद्धांतों को पूरा करने का मौका प्रदान करती हैं। शिक्षक कार्य संतुष्टि पैमाने के आयाम: मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार, खुशी एक अनुभूति है जो किसी को अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है। यह किसी व्यक्ति के जीवन भर के कई दृष्टिकोणों की पराकाष्ठा है। इस प्रकार संतोष प्राप्त करना ही मुख्य लक्ष्य है। शिक्षक कार्य संतुष्टि का मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित कारकों को ध्यान में रखा गया:-

1. वेतन एवं अन्य उपलब्धियां
2. सहयोगी अध्यापक से संबंध
3. अध्यापक, प्राधानाचार्य संबंध
4. व्यावसाय
5. अध्यापक-विद्यार्थी संबंध
6. संस्था की व्यवस्था
7. कार्य की स्थिति
8. कार्य का भार

9. क्षमता का उपयोग 10. उपलब्धियाँ

11. क्रियायें

12. सामूहिक सहयोग की भावना

13. पर्यवेक्षण

14. परिवारिक जीवन 15. स्वतंत्रता

16. नीतियां एवं क्रियान्वयन

17. विकास की सम्भावनायें

18. पुस्तकालय नीतियां एवं उनका क्रियान्वयन

19. सुरक्षा

20. पहचान एवं परिस्थिति

निष्कर्ष:

अपने काम से शिक्षकों की संतुष्टि के अध्ययन ने शिक्षण पेशे की जटिल गतिशीलता और शिक्षा पर इसके प्रभाव में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की है। नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों के व्यापक विश्लेषण के माध्यम से, इस शोध ने शिक्षकों की जरूरतों और कल्याण को पहचानने और संबोधित करने के महत्व पर प्रकाश डाला है।

इस अध्ययन के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि केवल मौद्रिक मुआवजे पर निर्भर नहीं है, बल्कि सहायक कार्य वातावरण, पेशेवर विकास के अवसर, मान्यता और सार्थक छात्र-शिक्षक संबंधों सहित कई कारकों से प्रभावित होती है। जो शिक्षक अपने प्रयासों के लिए मूल्यवान और सराहना महसूस करते हैं, वे उच्च स्तर की नौकरी से संतुष्टि प्रदर्शित करते हैं, जिससे अधिक व्यस्त शिक्षण प्रथाओं और बेहतर छात्र परिणामों की ओर अग्रसर होते हैं।

इसके अलावा, यह स्पष्ट है कि शिक्षकों की संतुष्टि उनकी व्यक्तिगत भलाई से परे फैली हुई है। संतुष्ट शिक्षक अपने पेशे के प्रति अधिक प्रतिबद्ध होते हैं, जिससे शिक्षक प्रतिधारण दर अधिक होती है और प्रतिभाशाली व्यक्ति शिक्षा के क्षेत्र में आकर्षित होते हैं। यह, बदले में, समुदायों के भीतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की स्थिरता और निरंतरता पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

निष्कर्षतः, शिक्षकों की अपने काम से संतुष्टि के अध्ययन ने शिक्षकों की खुशी और संतुष्टि में निवेश के महत्व को रेखांकित किया है। भावी पीढ़ियों को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानकर और उनकी नौकरी की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले बहुमुखी

कारकों को समझकर, हम शिक्षकों के लिए अधिक सहायक, सशक्त और पुरस्कृत वातावरण बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, एस.सी. व विशाल (2009). शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व कार्य के प्रति समर्पण के संदर्भ में अध्ययन, एज्यूट्रेक्स, नीलकमल पब्लिकेषन, अप्रैल 2009, वॉल्यूम 08. न. 6. पृ.सं. 32-351

2. चौपड़ा, अरूणा (2015), जॉब सैटिसफेशन ऑफ टीचर एज्यूकेटर्स इन रिलेशन टू देयर टीचिंग इफेक्टिव-नेस एण्ड प्रोफेषनल कमिटमेंट (http://hdl.handle.net/0603/94177), पीएच.डी. एज्युकेशन, कुरुक्षेत्र, यूनिवर्सिटी ।

3. रानी, सुरेश (2015), ए स्टडी ऑफ वूमन टीचर्स एटीट्यूड टूवार्डस टीचिंग इन रिलेषन टू देयर जॉब सैटिसाफेक्षन लेवल ऑफ एसपाइरेशन एण्ड क्वालिटी ऑफ लाइफ, (http://hdl.handle.net/10603/89881), पीएच.डी. एज्यूकेशन, कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी ।

4. अग्रवाल जे. सी. एजुकेशनल रिसर्व एन इन्ट्रोडक्सन, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली 5. श्री अग्रवाल जे. सी. रीसेन्ट डवलपमेन्ट इन इण्डियन एजुकेशन